अध्याय प्रथम

शोध परिचय

अध्याय – प्रथम

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने विद्यालय के अनाकर्षक परिवेश, भवनों की असंतोषजनक दशा और शिक्षा सामग्री का अभाव इन बातों पर चिंता व्यक्त की है। वर्तमान में शिक्षा की स्थिति को देखने पर इसमें क्रांति में आवश्यकता दृष्टिगोचर होती है। इसके लिए प्रत्येक विषय में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की पूर्ति हेतु नये उपागमों की खोज करना तथा विद्यार्थियों के हित में शोध करना मूलभूत आवश्यकता बन गई है।

भूगोल विषय विद्यार्थियों की शैक्षिक दृष्टि से तथा दैनंदिन व्यवहार की दृष्टि से अधिक उपयुक्त है। भूगोल विषय में अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक कठिनाई होती है, क्योंकि भूगोल विषय में अधिकांश पाठ्यवस्तु विद्यार्थी के अनुभव क्षेत्र से बाहर होती है। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को भूगोल का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं रहता, यही कारण है कि भूगोल का ज्ञान विद्यार्थी को शुद्ध रूप से देना कठिन होता है। इसीलिए भूगोल के शिक्षक को भूगोल का उचित ज्ञान प्रदान करने के लिए प्रत्यक्ष अनुभव के साथ साथ कुछ शिक्षक सामग्री को भी प्रयोग करना पड़ता है।

1.2 भूगोल का उद्भव एवं विकास

आज का भूगोल हजारों वर्षों से वंचित ज्ञान का परिणाम है। प्रारंभ में भूगोल का जन्म यात्राओं से हुआ।

'थेल्स' प्रथम व्यक्ति था, जिसने भूगोल की शुरूआत की। भूगोल का शाब्दिक अर्थ होता है 'गोल पृथ्वी'। माल्टन ने भूगोल के अंदर पृथ्वी के प्रत्येक भाग की जैसे मिट्टी, वनस्पति, नदियाँ, जलवायु, पशु और मनुष्य जो एक

दूसरे को प्रभावित करते हैं, को सम्मिलित किया है। भूगोल का मुख्य उद्देश्य मानव और वातावरण के परस्पर सामंजस्य का पता लगाना है। भूगोल का उद्भव यात्राओं से होकर अनेक विद्वानों ने इसके विकास के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

1.3 भूगोल में भाषा का स्वरूप

भाषा मस्तिष्क और हृदय की चेरी बनती हुई ध्वनि रूप में या लिपिरूप में विचारों और भावों की अभिव्यक्ति है। मि. स्वीट के अनुसार, 'भाषा स्वर ध्वनि के द्वारा विचारों का अभिव्यक्तिकरण है।'

'मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है जिसके द्वारा मन की बात बतलाई जाती है उसे भाषा कहते हैं।'

हृदय भावों का सागर है। इन हृदयस्थित भावों को प्रकट करना, शब्दों को संकेत के माध्यम से मूर्त से अमूर्त रूप देना इन सबका साधन नही भाषा है। भूगोल यह पृथ्वी का वर्णन है। पृथ्वी के वर्णन के अंतर्गत विशेष रूप से खाड़ियाँ, समुद्र, पहाड़, नदियाँ, पठार, मैदान ही आते हैं।

शाब्दिक अर्थ में भूगोल का अर्थ होता है गोल पृथ्वी। अर्थात् गोल पृथ्वी का वर्णन जो विषय करता है वह भूगोल है। अंग्रेजी के शब्द Geography की यदि व्याख्या करें तो दो भाग होते हैं Geo + graphy. Geo अर्थात 'पृथ्वी' और graphy अर्थात 'वर्णन' अर्थात् 'पृथ्वी का वर्णन ही भूगोल है।'

1.4 भूगोल विषय की विधियाँ

शिक्षक छात्रों को अधिकाधिक सीखने एवं ज्ञान देने के लिए अनेक रोचक विधियों द्वारा पाठ्यपुस्तक प्रस्तुत करता है। विधियाँ ही पाठन विधियाँ कही जाती हैं। ये विधियाँ विषय एवं बिन्दु के अनुसार बदल जाती है। प्रायः कोई भी एक विधि किसी भी विषय को पढ़ाने के लिए नहीं होती है। अतः शिक्षक को अनेक विधियों का ज्ञान होना आवश्यक है।

शिक्षा में सबसे अधिक महत्त्व दिया जा रहा है विद्यार्थी को। विद्यार्थी को केन्द्र मानकर जिसमें व्यक्तिगत विकास हो सके, ऐसी शिक्षण विधियों को महत्त्व दिया जाने लगा है।

भूगोल शिक्षण की प्रमुख विधियाँ निम्नलिखित हैं :-

1. प्रादेशिक विधि
2. निरीक्षक विधि
3. वर्णनात्मक विधि
4. तुलनात्मक विधि
5. आगमन विधि
6. निगमन विधि
7. भाषक विधि
8. प्रश्नोत्तर विधि
9. पाठ्यपुस्तक विधि
10. भ्रमणात्मक विधि
11. प्रयोगशाला विधि
12. डाल्टन विधि
13. प्रोजेक्ट विधि

1.5 भूगोल विषय में मानचित्र

भूगोल विषय में स्थान और दूरी का महत्त्व है। आज जब भूगोल के अंतर्गत पृथ्वी को मानव घर के रूप में अध्ययन किया जाता है तब बड़ा आवश्यक हो जाता है तथा कहाँ अभाव है इसके किस भाग में मानव ने अधिक सांस्कृतिक उन्नति कर ली है कौन सा भाग अभी भी पिछड़ी अवस्था में है, इसी प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देने में मानचित्र बड़ा सहायक है।

मानचित्र वह उपलब्धि है जिसने यात्राओं, खजानों की खोजों और अन्वेषकों आदि में अपरिचित रूप से मानव की सहायता की है। मानचित्र के

लाभ तभी प्राप्त हो सकते हैं जब मानचित्र की भाषा का ज्ञान हो। मानचित्र में 1. संकेतों, 2. मापक, 3. दिशाएँ, 4. अक्षांश – देशांतर, 5. प्रक्षेप का प्रकार जिस पर बना है, 6. मानचित्रों के आधार पर निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए। इस प्रकार भूगोल का सम्पूर्ण ज्ञान मानचित्रों में विद्यमान है।

1.6 भूगोल शिक्षण का स्वरूप

ऐतिहासिक घटनाओं से लेकर किसी क्षेत्र का धरातलीय स्वरूप भौतिक तथा मानव निर्मित/आधारित उद्योग–धंधे, यातायात, संचार–साधन, रीति–रिवाज, आचार–विचार, व्यवहार तथा परम्परा आदि समस्त सामाजिक क्रियाकलापों को ठीक ढंग से समझने के लिए भौतिक तथ्यों के ज्ञान की आवश्यकता होती है। इसके अलावा पृथ्वी की स्थलाकृति, वायुमण्डलीय परिघटना आदि में तथ्यों का ज्ञान होता है। इतना ही नहीं भूगोल विषय में अध्ययन से मानसिक विकास होता है। वह विद्यार्थी जिन्हें भूगोल का ज्ञान होता है वह अपने को विश्व का नागरिक मानने से इनकार नहीं कर पाता। अतः प्राथमिक स्तर पर भी यह एक महत्त्वपूर्ण विषय है क्योंकि प्राथमिक स्तर पर जो ज्ञान विद्यार्थी को दिया जाता है वही उनकी भविष्य की नींव होता है।

विद्यार्थी केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने की दृष्टि से भूगोल का अध्ययन करते हैं और फिर समयांतर में सबकुछ भूल जाते हैं। अतः यह शिक्षकों का दायित्व है कि वे भूगोल विषय को इस तरीके से पढ़ायें कि विद्यार्थी अपने भूगोल का ज्ञान अधिकाधिक मजबूत कर सके। अगर भूगोल विषय पाठ्यपुस्तक विधि से रटवा दिया गया तो निश्चित है कि केवल उस कक्षा की परीक्षा तक वो उन्हें याद रहेगा, लेकिन वे बाद में इसे भूल जायेंगे तथा यह ज्ञान उनके किसी काम नहीं आयेगा। परंतु आज भूगोल अध्यापन करते समय अधिकतर अध्यापक इसी तरीके से अध्यापन करते हैं और अपने अध्यापन में शैक्षिक सामग्री का उपयोग नहीं करते परंतु विद्यार्थी की दृष्टि से यह बात बहुत की

बुरी है। अध्यापन इस तरीके से होना चाहिए कि विद्यार्थी उस ज्ञान को दीर्घकाल तक याद रख सके।

1.7 भूगोल शिक्षण की सहायक सामग्री

भूगोल शिक्षण में अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक कठिनाई होती है क्योंकि भूगोल के विषय अधिकांश रूप में विद्यार्थी के प्रत्यक्ष अनुभव क्षेत्र से बाहर रहते हैं। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को किसी भौतिक वर्णन का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं रहता। यही कारण है कि भूगोल में विषयों का ज्ञान शुद्ध रूप से देना कठिन होता है इसीलिए भूगोल के शिक्षक को भूगोल का उचित ज्ञान प्रदान करने के लिए प्रत्यक्ष अनुभव के साथ साथ युक्तियों का भी प्रयोग करना पड़ता है। भूगोल में विषय सामग्री का चक्र ज्ञान केवल शब्दों द्वारा ही नहीं होता है। इसीलिए भूगोल शिक्षक उचित स्थान एवं मनोवैज्ञानिक समय पर सहायक सामग्री का प्रयोग करते हैं।

भूगोल शिक्षण में अनेक सहायक सामग्रियाँ हैं जो शिक्षक को शिक्षण कार्य में सहायता प्रदान करती हैं। इस प्रकार की सामग्री सीखने में मनोविज्ञान के प्रेरक और रूचि सिद्धांतों की पूर्ति भी करती है। भूगोल विषय तो बिना इन सामग्रियों का उपयोग किये पढ़ाया ही नहीं जा सकता। यदि कोई शिक्षक ऐसा करता है तो, केवल पढ़ाने की खानापूर्ति ही करता है। विषय तथा विद्यार्थियों के प्रति न्याय नहीं करता।

सहायक सामग्री के प्रयोग से भूगोल शिक्षक में वास्तविकता व सजीवता आती है। विद्यार्थियों की भूगोल के विषय एवं पाठ में रूचि उत्पन्न होती है क्योंकि सहायक सामग्री विभिन्नता के सिद्धांत को पूर्ण करती है। भूगोल की कठिन बातों एवं तथ्यों को सरल बनाने के लिए सहायक सामग्री आवश्यक है। प्रत्यक्ष अनुभव से प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है। उसे विद्यार्थी भूलते नहीं है।

शिक्षक सहायक सामग्रियों को तीन भागों में बाँट सकते हैं :-

1. दृश्य सामग्री
2. श्रव्य सामग्री
3. दृश्य-श्रव्य सामग्री

1. दृश्य सामग्री :

इसमें वह सामग्री आती है जिसके द्वारा छात्र आँखों के माध्यम से ज्ञान अर्जित करते हैं :

1. श्यामपट, 2. मानचित्र 3. ग्लोब, 4. एटलस, 5. चार्ट, 6. ग्राफ, 7. चित्र, 8. रेखाचित्र, 9. मॉडल, 10. स्टीरियोस्कोप।

2. श्रव्य सामग्री :

1. टेपरिकार्डर, 2. रेडियो इत्यादि।

3. दृश्य और श्रव्य सामग्री :

1.चलचित्र, 2. टेलीविजन, 3. कम्प्यूटर

1. श्यामपट

प्रत्येक विषय में श्यामपट अध्यापन में बड़ा सहायक है। परंतु भूगोल में इसका प्रयोग और भी अधिक उपयोगी है। शिक्षक भूगोल की मुख्य बातें संक्षिप्त रूप में पाठ के सारांश के रूप में श्यामपट पर लिखता है। इसके साथ साथ भूगोल की अनेक बातें श्यामपट पर सुगमता व सरलतापूर्वक समझाई जा सकती हैं।

पर्वतों से नदी का निकलना, नदी से नहर का निकलना, झरने, पर्वत, घाटियाँ, किसी नगर की भौगोलिक स्थिति, चन्द्रमा की कलायें, ज्वालामुखी, पर्वत, सूर्यग्रहण, चंद्रग्रहण आदि की आकृति द्वारा श्यामपट पर समझाया जा सकता है।

2. भित्ति मानचित्र

भूगोल विषय में भित्ति मानचित्र का बड़ा महत्त्व है। मानचित्र के द्वारा एटलस के मानचित्रों को दिखाये गये भौगोलिक तथ्यों को बड़े आकार में दिखाया जाता है तथा जो भौगोलिक तथ्य एटलस में न दिखाये जा सकते हैं उनको भी भित्ति मानचित्र पर प्रदर्शित किया जा सकता है।

प्राकृतिक भूगोल के अध्यापन में दीवार मानचित्र एक बहुत ही आवश्यक चित्र है। अध्यापक अपने अध्यापन में किसी भी भौगोलिक वस्तु का नाम दीवार मानचित्र पर प्रदर्शित कर सकता है।

3. ग्लोब

पृथ्वी की आकृति की प्रतिकृति को ग्लोब कहते हैं। प्रत्येक विद्यालय में ग्लोब का होना आवश्यक है। जिस प्रकार भित्ति मानचित्रों की तुलना में एटलस अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। विद्यार्थियों को आरंभ से ही ग्लोब से परिचित करा देना चाहिए। इसी से उनको पृथ्वी के सही आकार का ज्ञान हो सकता है। कक्षा 3 में अथवा इससे पूर्व विद्यार्थियों को ग्लोब दिखा देना चाहिए। एटलस या दीवार मानचित्र के प्रयोग से पहले ही उसकी जानकारी कर देनी चाहिए।

ग्लोब पृथ्वी का सबसे अधिक, अच्छी तरह प्रतिनिधित्व करता है। बहुत सारी बातों को हम मानचित्रों द्वारा स्पष्ट नहीं कर सकते जैसे पृथ्वी गोल है, पृथ्वी के विभिन्न भागों का वास्तविक एवं सापेक्षिक आकार, पृथ्वी पर जल मण्डल का वितरण, पृथ्वी तथा सूर्य का संबंध, चंद्रकलायें, दिन–रात, आने जाने के मार्ग, अक्षांश व देशांतर, पृथ्वी की वार्षिक गति, मौसम ताप कटिबंध, जलवायु, वनस्पति, वायुपिटियाँ, दिशायें, प्राकृतिक प्रदेश, महाद्वीपों, महासागरों के आकार व स्थिति का ज्ञान ग्लोब की सहायता से आसानी से कराया जा सकता है।

4. एटलस

भूगोल की शिक्षा पूर्णतः मानचित्रों पर आधारित है। इसीलिए एटलस भूगोल का अत्यंत आवश्यक और महत्त्वपूर्ण यंत्र है। दीवार मानचित्रों की अपेक्षा एटलस अधिक महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। एक अच्छी एटलस मानचित्रों और ग्लोब, दोनों का कार्य करती है। किसी स्थान की विद्युत जानकारी, दो प्रदेशों की तुलना अथवा भौगोलिक उलझनों को सुलझाने में एटलस सबसे अधिक मदद करता है।

एटलस का भूगोल विषय में प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। यह एक प्रकार का विशिष्ट कोष है जो छात्रों को भौगोलिक ज्ञान की अभिवृद्धि में मदद देता है।

जब छात्र देश अथवा विदेश के नगरों, पहाड़ों, नदियों, झीलों, महत्त्वपूर्ण उद्योगों केन्द्रों, वर्षा के वितरण और भूमि के धरातल को देखना चाहते हैं तब इसका प्रयोग अत्यावश्यक हो जाता है। नये नाम, नये संबंध एटलस में ढूंढ़े जाते हैं। इससे स्थानों की दूरी, दिशा और प्रदेशों का यह आकार, विस्तार व स्थिति का ठीक–ठीक ज्ञान प्राप्त होता है। एटलस मानचित्रों का अध्ययन कराने के काम आती है। भूगोल शिक्षण में मानचित्रों का अभ्यास बड़ा उपयोगी है। विभिन्न भौगोलिक तथ्य और संबंध एटलस की सहायता से आसानी में समझ में आ जाते हैं। इससे विद्यार्थियों के समय व शक्ति की बचत होती है। एटलस के प्रयोग से विद्यार्थियों में स्वाध्याय करने की जागरूकता बढ़ती है।

5. चार्ट एवं रेखाचित्र

भूगोल शिक्षण में चार्ट अति महत्वपूर्ण है। वर्षा, तापमान, उपज क्षेत्रफल व जनसंख्या आदि को चार्टों द्वारा भूगोल के पाठ्य विषय को सरल एवं रोचक बनाया जा सकता है। कुछ चार्ट ग्राफ के रूप भी ले सकते हैं।

रेखाचित्रों का भूगोल विषय में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। विभिन्न भौगोलिक तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है। जैसे ऋतु परिवर्तन का होना, चंद्रमा की कलायें, उपज आयात निर्यात, विभिन्न नगरों का तापमान चंद्रग्रहण सूर्यग्रहण आदि को रेखाचित्रों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

6. मॉडल

मॉडल वास्तविक वस्तुओं का प्रतिरूप होता है जिसमें लंबाई–ऊँचाई, चौड़ाई और मोटाई दी जाती है। इस नकल अथवा प्रतिरूप को देखकर हम वास्तविक वस्तु का अनुमान लगा सकते हैं।

भूगोल के ऐसे बहुत से पाठ हैं जिनमें चित्र, आकृति से काम नहीं लिया जा सकता है, उनमें मॉडल से ही काम लिया जाता है। जिन भौगोलिक वस्तुओं को कक्षा में लाना संभव नहीं है, उन्हें मॉडल के रूप में विद्यार्थियों के समक्ष रखा जाता है। विद्यार्थियों से भूगोल विषय में संबंधित निम्न प्रकार के मॉडल बनवाये जा सकते हैं। टुण्ड्रा निवासियों का घर, इग्लू, ज्वालामुखी, भूकंप आदि। भूगोल में मॉडल का प्रयोग काफी होता है।

7. नमूने

भूगोल में व्यावहारिक पक्ष का भी बहुत महत्त्व है। कहा तो यहाँ तक जाता है कि अधिकांश भूगोल पैरो के द्वारा जाना जाता है बजाय मस्तिष्क के। इसका आशय है कि हम जितनी पृथ्वी के वास्तविकता को ही देखेंगे उतना ही भूगोल का वास्तविक ज्ञान बढ़ेगा। नमूने वास्तविक ज्ञानोपार्जन में काफी सहायता करते हैं। विभिन्न चट्टानों, खनिज, मिट्टी आदि पढ़ाने समय तो चट्टानों के खनिजों तथा मिट्टी के नमूने विद्यार्थियों को वास्तविकता के निकट पहुँचा देते हैं।

8. एपिडायस्कोप

चित्र देखनेवाला एक दूसरा यंत्र एपिस्कोप है। इस यंत्र में स्लाइड बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। लेन्टर्न की तुलना में यह यंत्र अधिक सुविधाजनक होता है। एपिस्कोप के द्वारा चित्र, मॉडल के बड़े रूप पर्दे पर दिखाये जा सकते हैं। इस यंत्र के द्वारा वस्तुओं के चित्र भी पर्दे पर प्रदर्शित किये जा सकते हैं।

9. रेडियो

हमारे देश में दिल्ली तथा अन्य राज्यों के केन्द्रों से प्रतिदिन प्रसारण होता रहता है। प्रसारण में हमको भूगोल के समाचारों तथा वार्ताओं को भी सुनने का अवसर प्राप्त होता है। जेसे प्रतिदिन मौसम या ज्वालामुखी की घटना, महत्त्वपूर्ण यात्रा का वर्णन, कृषि संबंधी वार्तायें, जनसंख्या संबंधी सूचनाएँ आदि।

10. चलचित्र

भारत में चलचित्र का प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में अधिक हो पाया है। दूसरे देशों में इसका प्रयोग बहुत किया जा रहा है। अनेक शैक्षिक चलचित्र देश में बनाए गए हैं जो भूगोल विषय में पढ़ाने के लिए उपयोगी हैं।

चलचित्र की सहायता से भौगोलिक तथ्यों व वस्तुओं को श्रव्य व दृश्य दोनों की ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इनके माध्यम से भौगोलिक तथ्यों की वास्तविकता को प्रदर्शित किया जा सकता है। चलचित्र के माध्यम से भूगोल की शिक्षा रुचिकर बनाई जा सकती है।

11. टेलीविजन

दृश्य-श्रव्य सामग्री में टेलीविजन का भी बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस यंत्र का प्रयोग विदेशों में विभिन्न विषयों की शिक्षा देने में लिया जाने लगा है। भूगोल के विभिन्न विषयों पर भाषण, भौगोलिक महत्त्व के स्थानों का प्रदर्शन,

विभिन्न दृश्य, जंगल, कारखाने, मानवजीवन, रहन–सहन, आवास आदि बातों का ज्ञान टेलीविजय के माध्यम से कराया जा सकता है।

12. कम्प्यूटर

दृश्य–श्रव्य सामग्री में कम्प्यूटर का भी बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस यंत्र का प्रयोग कक्षा में हर विद्यार्थी को दिया जाता है। भूगोल के विभिन्न विषयों के भाषण, भौगोलिक महत्त्व के स्थानों का प्रदर्शन, विभिन्न दृश्य, जंगल, कारखाने, स्थल, मानवजीवन, रहन–सहन, आवास आदि बातों का ज्ञान कम्प्यूटर के माध्यम से कराया जा सकता है।

कम्प्यूटर यह अद्भूत शक्ति से युक्त होता है। इसमें अनुरूप पाठ्य सामग्री के चलित चित्रों को प्रस्तुत किया जाता है इसीलिए शिक्षा के हर क्षेत्र में कम्प्यूटर का ज्ञान दिया जाता है।

स्कूल शिक्षा में कम्प्यूटर का समावेश कक्षा प्रोजेक्ट के अंतर्गत किया गया है। कम्प्यूटर की सहायता से विद्यार्थियों को अनुदेशन प्रदान किया जाता है, तब कम्प्यूटर तथा अधिगमकर्ता के मध्य परस्पर अल्प प्रक्रिया होती है। इस तरह से कम्प्यूटर विद्यार्थियों के समक्ष छोटे पर्दों के रूप में शिक्षण सामग्री प्रदान करता है।

1.8 भूगोल शिक्षण में मानचित्र का स्थान

मानचित्र शब्द लेटिन भाषा के 'मेपा' का रूपान्तर है जिसका अर्थ ढ़कने का कपड़ा अथवा (Table) मेज होता है। अंग्रेजी में इसे Map कहते हैं। वर्तमान में मानचित्र शब्द आधुनिक युग के उर्दू के 'नक्शा' इस शब्द के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

भूगोल शिक्षण में मानचित्रों का बड़ा महत्त्व है। मानचित्रों के द्वारा एटलस के मानचित्रों में दिखाये गये भौगोलिक तथ्यों को बड़े आकार में

दिखाया जाता है तथा जो भौगोलिक तथ्य एटलस में न दिखाये जा सकते हों उनको भी मानचित्र पर प्रदर्शित किया जा सकता है।

प्राकृतिक भूगोल के अध्यापन में दीवाल मानचित्र एक बहुत ही आवश्यक चित्र है। अध्यापक अपने पढ़ाने में किसी भी भौगोलिक वस्तु का नाम दिवाल मानचित्र पर प्रदर्शित कर देता है। कभी-कभी कुछ भौगोलिक बातें एटलस में नहीं दिखायी जाती। अध्यापक उनको मानचित्र की सहायता से दिखा सकता है।

आधुनिक युग में मानचित्रों का प्रयोग अत्याधिक बढ़ रहा है। इसका प्रयोग विभिन्न वस्तुओं के वितरण, विभिन्न देशों अथवा प्रदेशों की तुलना एवं विविध जन कल्याण के कार्य, आवागमन के साधन एवं बाढ़ नियंत्रण आदि के लिए किया जा सकता है।

1.9 मानचित्र की भाषा

मानचित्र, मानचित्र की भाषा में ही लिखे जाते हैं। यह भाषा कुछ संकेतों की है जिसे भूगोल के विद्यार्थी को जानना आवश्यक है। ये संकेत, विभिन्न भौतिक दशाओं - पर्वत, पठार, नदियों, घाटियों को प्रकट करते हैं तथा सांस्कृतिक मनुष्य के निवास की दशाए, बसाव के प्रकार, नगर, सड़कें, रेलमार्ग आदि प्रकट करते हैं।

ये संकेत कुछ तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत हैं और कुछ संकेत एक मानचित्र से दूसरे मानचित्र में बदल सकते हैं। अतः प्रत्येक मानचित्र में उसके संकेत नीचे दिये रहते हैं। इन संकेतों से लाभ यह है कि मानचित्र में स्थान के अभाव में भी सभी कुछ लिखा जा सकता है और समय की बचत भी हो जाती है।

1.10 मानचित्रों की उपयोगिता

1. किसी स्थान की संबंधित दूरी ज्ञात करना
2. किसी स्थान की भौतिक एवं सांस्कृतिक जानकारी ज्ञात करना।

3. जलवायु के अध्ययन में सहायक

4. वितरण मानचित्रों के आधार पर दैनिक जीवन में मदद।

5. संपूर्ण विश्व के किसी भी कोने का अल्प समय में ही ज्ञान संभव

6. विश्व के दो आदि भागों की तुलना करने में मदद।

1.11 शैक्षिक सामग्री का प्राथमिक शिक्षा में स्थान

प्राथमिक शिक्षा वह शिक्षा है जो माध्यमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा के लिए छात्र का आधार तैयार करता है। जिस प्रकार बालक बाल्यावस्था में खिलौने की सहायता से विभिन्न वस्तुओं को समझता है उनमें अंतर करना सीखता है वही कार्य प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थी के लिए शैक्षिक सामग्री का होता है। शैक्षिक सामग्री ही विद्यार्थी के अधिगम को प्रभावी बनाती है। विद्यालय में छात्रों को सभी भौतिक सुविधायें उपलब्ध हों, जैसे भवन, मैदान, बोर्ड, चार्ट, नक्शा आदि परंतु यदि छात्र के स्वयं के पास अध्ययन हेतु आवश्यक शिक्षण सामग्री जैसे स्लेट, पेंसिल, कॉपी, किताब आदि उपलब्ध न हो उसे प्रदान की जानेवाली भौतिक सुविधायें भी उनके अधिगम को प्रभावी नहीं बना सकेगी।

शैक्षिक सामग्री उस माध्यम का कार्य करती है जो सभी छात्रों को यह अवसर देती है कि वह अपनी क्षमतानुसार उसके लाभ उठाकर अधिगम करें एवं सभी कौशलों को सीख सके। प्राथमिक स्तर पर यदि विद्यार्थी के पास किसी कारण से शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता में कमी रह जाये तो यह कमी उसके आगे की माध्यमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा ग्रहण करने के समय तक बनी रह सकती है।

प्राथमिक स्तर पर यदि उसके पास शैक्षिक सामग्री उपलब्ध रहे तो यह संभव है कि वह सभी कौशलों का अभ्यास भी कर सके एवं सीख सके इसके पश्चात् यदि उसमें कमी रह जाती है तो यह उसकी क्षमता की कमी होने के कारण होगी। अतः यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक शिक्षा में शिक्षण

सामग्री का सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान होता है जिसके अभाव में अधिगम प्रक्रिया प्रभावी नहीं हो सकती तथा विद्यार्थियों का अधिगम भी संभव नहीं हो सकता।

1.12 भूगोल शिक्षण में सहायक सामग्री का महत्त्व

अधिकतर भूगोल के शिक्षक, सहायक सामग्रियों के उपयोग के बिना भूगोल विषय, पाठ्यपुस्तक विधि के द्वारा परीक्षा की तैयारी के उद्देश्य से रटवा लेते हैं। उनका कोई दूरगामी उद्देश्य नहीं होता।

बच्चों को भूगोल विषय पढ़ाते समय शैक्षिक सामग्री का उपयोग करके पढ़ाना कितना प्रभावी साबित होता है इसका पता इस अध्ययन से लगाया गया है।

विद्यार्थियों के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए तथा शिक्षकों को उनके दायित्व को ज्ञात कराने के लिए इस शोध में भूगोल विषय में शैक्षिक सामग्री के प्रयोग से कक्षा 7 के विद्यार्थियों को भूगोल विषय संबंधी ज्ञान प्राप्ति में क्या प्रभाव हो रहा है, इसका अध्ययन किया गया है। इस शोध का उपयोग भूगोल विषय में अध्यापकों को अपने दैनंदिन अध्यापन में होगा। प्रशासन को भूगोल विषय और शैक्षिक सामग्री इनका क्या संबंध है इसका पता चलेगा। भूगोल कक्ष की क्या आवश्यकता है पाठशाला में भूगोल विषय संबंधित कौन–कौन सी शैक्षिक सामग्री होनी जरूरी है, विद्यार्थियों की दृष्टि से भूगोल की ज्ञान प्राप्ति में शैक्षिक सामग्री की क्या भूमिका है इसका पता चलेगा। इसके अनुरूप प्रशासन भूगोल संबंधी अपनी प्रशासन व्यवस्था को आकार देगा।

1.13 सहायक सामग्री के विभिन्न फायदे

सहायक सामग्री में विशेष कर दृश्य–श्रव्य शिक्षण का आधार पूर्णतः मनोवैज्ञानिक है। इस शिक्षण में मौखिक शब्दों के बजाए प्रदर्शनात्मक वस्तुओं पर अधिक बल दिया जाता है। इस प्रकार बालक अपनी सुनने की इंद्रियों के साथ–साथ देखने और स्पर्श इंद्रियों का भी प्रयोग करता है। दृश्य–श्रव्य शिक्षक

के महत्त्व तथा लाभ पर प्रकाश डालते हुए **मेवकल्स जी** ने लिखा है कि, *'दृश्य–श्रव्य शिक्षक शाब्दिकता का प्रतिकार है।'*

सहायक सामग्री के विभिन्न फायदे निम्नानुसार हैं :–

1. शिक्षण उपकरण के रूप में दृश्य–श्रव्य सामग्री के लाभ का मूल्यांकन उसके उपयोग के निम्नांकित उद्देश्यों से उपलब्धि के आधार पर किया जा सकता है।
2. दृश्य–श्रव्य सामग्री के प्रयोग से बालक पाठ्य सामग्री के ज्ञान को स्पष्ट रूप से ग्रहण कर लेते हैं।
3. दृश्य–श्रव्य सामग्री के प्रयोग से बालक रहने के स्थान पर स्वयं क्रिया करके ज्ञान ग्रहण करते हैं।
4. शैक्षिक सामग्री के प्रयोग से बालकों की शब्दावली में वृद्धि होती है।
5. दृष्य–श्रव्य सामग्री के प्रयोग से बालकों को अनेक प्रकार की क्रियाओं जैसे प्रश्न पूछना, उत्तर देना, परस्पर वाद–विवाद करना आदि को करने के अवसर प्राप्त होते हैं।

1.14 सामाजिक विज्ञान शिक्षण में सहायक सामग्री का महत्त्व

नवीन प्रौद्योगिकी के अंतर्गत रेडियो, टेलीविजन, टेपरिकार्डर, विडियो–कैसेट, सी.डी., डी.वी.डी., आदि उपकरण अत्यंत प्रभावी शिक्षण सहायक सामग्री होती है। किन्तु प्रत्येक विद्यालय में ये उपकरण उपलब्ध नहीं होते। इसीलिए शिक्षक द्वारा स्वनिर्मित उपकरणों को भी प्रभावी रूप से प्रयुक्त किया जा सकता है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में सहायक सामग्री शिक्षण को बोधगम्य बनाती है। दृश्य–श्रव्य सामग्री एक स्पष्ट सामग्री होती है इससे ज्ञानार्जन के सबसे प्रशस्त मार्ग निर्मित होते हैं। सहायक सामग्री के प्रयोग से समय की बचत भी होती है इसके द्वारा विद्यार्थियों की प्रमाणिक बातें अत्यंत सरल रूप से प्राप्त हो जाती हैं और विद्यार्थियों की पर्यवेक्षण शाक्ति तथा कल्पनाशक्ति विकसित होती है।